

॥ जलमधुल पुण्याख्यार ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 170

विवि ०८८

ॐ कुरु मे नमो भगवते



ॐ ह्रीं नमो भगवते



सर्वं जीवन्मुक्तं यो विदुः



ॐ ह्रीं



ॐ वक्र पा भगवते



ॐ वक्रा नमो भगवते



ॐ वक्र वक्र वं



ॐ वक्रा नमो भगवते



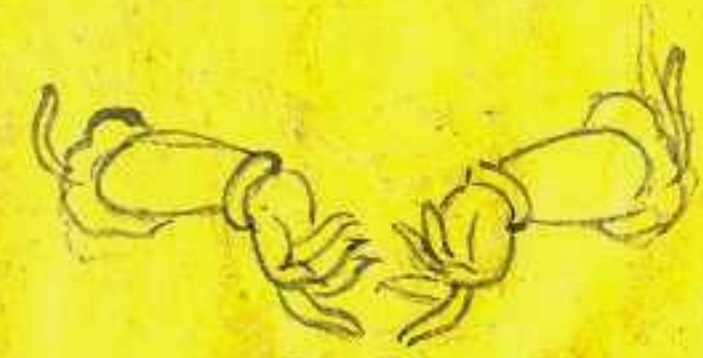
ॐ वक्र वक्र वं



ॐ ह्रीं नमो भगवते



ॐ वक्र वक्र वं



ॐ वक्र वक्र वं



ॐ वक्र उग्रह



ॐ वक्र पागळे पत जीची
५६ भरे ॥



ॐ वक्र लभर्ग ॥



ॐ क्रोः पडा जालें चूट भव



ॐ वक्र ह न्ये लाइ



ॐ वक्र जिंहे रा भंडा ॥



ॐ वक्र लभर्ग



वक्र लव दई पच भयं
क्र ने ह



ॐ वक्र ह आपळें दू



नॉर्गें स्वाहा



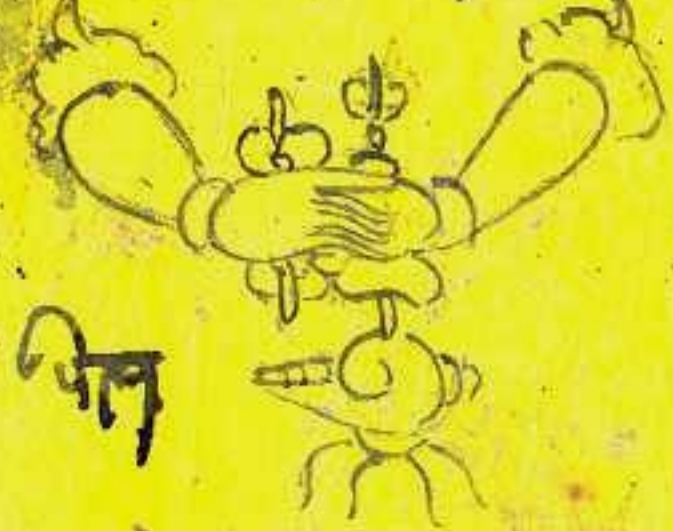
ॐ वक्र वक्र वं



ॐ वक्र स्वरु



ॐ वक्र प्रभु अं



पीत

ॐ वक्र प्रभु अं



हरीत

ॐ वक्र प्रभु अं



पीत

ॐ वक्र प्रभु अं



महान

ॐ वक्र प्रभु अं



महान

ॐ वक्र प्रभु अं



पीत

ॐ वक्र प्रभु अं



ॐ वक्र प्रभु अं



पित

ॐ वक्र प्रभु अं



पीत

ॐ वक्र प्रभु अं



पीत

ॐ वक्र प्रभु अं



पीत

ॐ वक्र प्रभु अं



पीत

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

उं वक्र संयुक्त



मौन

ॐ वक्रोपासना



वक्र

ॐ वक्रोपासना



वक्र

ॐ वक्रोपासना



वक्र

ॐ वक्रोपासना



वक्र

ॐ वक्रोपासना



वक्र

ॐ वक्रोपासना



वक्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वत्र भगवत्पदं

सर्वत्र भगवत्पदं

सर्वत्र भगवत्पदं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वथागतं वडं यम
नारि



मोक्ष

सर्वथागतं पूजो वाना ली ली
वमां



भीत

सर्वथागतं पूजो वडं यम
म रोगो वमां



सर्वथागतं पूजो म
ध म म म म म



भीत

सर्वथागतं पूजो म
म म म म म म



भीत

सर्वथागतं पूजो म
म म म म म म



भीत

ऊ सर्वथागतं पूजो म
म म म म म म



भीत

साधु साधु माहा त्व



भीत

पाना रोगो म म म



भीत

सर्वथागतं पूजो म
म म म म म म



भीत

सर्वथागतं पूजो म
म म म म म म



भीत

सर्वथागतं पूजो म
म म म म म म



भीत



पंडु पागना की सीध में

नीला

वडु गौतम की



पंडु

उं वडु वृत्त



पिता

वडा वीर की



हं म

सुख यागव पुठन पुष्य
मुद्रा की



पिता

उं वडु सख दुः



कुहा

पुत्र गायत्री की



विजय

पुत्र संतुष्ट वन्दनं कु
यौग



अप्या

सुख यागव पुठन
वन्दनान



वृत्त

पा धी सख वन्दनान



नीला

प्रका मुद्रा पुठन पुष्य



कुहा

उं अन्यो नृगवा सर्वधर्मा



अरु

पञ्चसूत्र नूतन
सर्वार्थ



ॐ अथ नूतन नूतन नूतन



ॐ अथ नूतन नूतन नूतन



ॐ नमो वेन्दते



ॐ नमो वेन्दते



ॐ नमो वेन्दते



पञ्चसूत्र नूतन नूतन
विश्व वन्दन



ॐ सर्वार्थानां मेघो हूँ



ॐ सर्वार्थानां मेघो हूँ



ॐ नमो वेन्दते



ॐ नमो वेन्दते



ॐ नमो वेन्दते



उं मृग शन यद्यगम
पं व



मृग

उं प्रणि प्रम हं वक्रस्य
मं ललं



प्रम

उं वक्रा वक्रि वी वक्रां



वक्रा



वक्रा

उं वक्रा धा वं मयि
वक्रा अक्रा मयि

उं वक्रा वक्रि वी वक्रां



वक्रा

उं वक्रा वक्रि वी वक्रां



वक्रा

उं धर्म वक्रि वी वक्रां



वक्रा

उं वक्रा वक्रि वी वक्रां



वक्रा

उं वक्रा



उं वक्रा वक्रि वी वक्रां



वक्रा

उं वक्रा वक्रि वी वक्रां



वक्रा

उं वक्रा वक्रि वी वक्रां



वक्रा, इति वक्रा मयि

वक्रा वक्रि वी वक्रां

नमस्तु भगवते शिष्य धर्मचक्र पर्वतन उद्धातुं जगत् सर्व साधय सर्वदुर्गता।
वन्दे भगवत्पुत्रं सत्त्वं गुरुं सर्वव्यापकं नातात्पुत्रं जनं त्रिमित्रं य-
द्वे मित्रिन् मुने सान् धर्माधारे मुनिना जिन गुरुमुदं मधुलं वज्रधनुं
सर्वानन्दं उक्तं यं युज्यते सुखमयं दहिना मातुः पुत्रं ज्ञानं गतुं मित्रिता
नैव भगवत्पुत्रं श्रीवज्रसत्त्वं मत्स्यं सिन्धुसां नमामि तस्मिन् सदा सत्त्वं नमस्तु
वृन्दोत्पदाद वज्रं पुनिना भगवत्पुत्रं सिन्धुसां नमामि तस्मिन् सदा सत्त्वं नमस्तु
लोकनाथं भगवत्पुत्रं वज्रं पुनिना भगवत्पुत्रं सिन्धुसां नमामि तस्मिन् सदा सत्त्वं नमस्तु

नमस्तु भगवते शिष्य धर्मचक्र पर्वतन उद्धातुं जगत् सर्व साधय सर्वदुर्गता।
कलिकल कमल कामलोत्पत्तं वन्दे भगवत्पुत्रं सिन्धुसां नमामि तस्मिन् सदा सत्त्वं नमस्तु
मायि शिष्यां सत्त्वं वज्रं पुनिना भगवत्पुत्रं सिन्धुसां नमामि तस्मिन् सदा सत्त्वं नमस्तु
भाषकीलापरिधय परिभाषा जिन धर्मं सर्वव्यापकं वन्दे भगवत्पुत्रं सिन्धुसां नमामि तस्मिन् सदा सत्त्वं नमस्तु
स्तोत्रं वन्दे भगवत्पुत्रं सिन्धुसां नमामि तस्मिन् सदा सत्त्वं नमस्तु ॥ ॥

इथर्मा रुद्रयुगावा रुद्रमसा रुद्रागम रुद्रमसा रुद्रागम रुद्रागम रुद्रागम ॥ ॥

ॐ वरु सत्त्व समय मन्यालव नऊ सत्त्व लून शुभिमा इ दाम्प हव सुख्याय हव अन्न कामाय
हव सर्व सीदि युप्रयुक्तु सर्वकर्म सुचिय स्थिर श्रीय कृत्र ई ह ह ह ह ह शरणवान सर्वम
था गन ॥ मा मे म बा हव समय सत्त्व ॥ ११ ॥ पू मि जल म धुल पुरव्या रव्यान स-

माक भ्रमण नयाल सच्च २४१ साल नार्मिक धुक्रा समी खंड थुग नल मधुल मु-
ख्याख्यान सिधयकांग हिनहल कनकजिह मरविहानया वजावायी इर्मधनं थाः शिमि

अथ काशाल भूषम् मस्तु ॥५

